

भारत सरकार

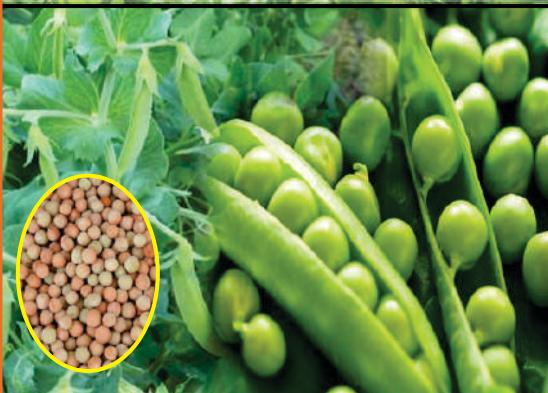
कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय
 (कृषि, सहकारिता एवं किसान कल्याण विभाग)
 दलहन विकास निदेशालय
 छत्वी मंजिल, विन्ध्याचल भवन
 शोपाल-462004 (म.प्र.)



Government of India

Ministry of Agriculture & Farmers Welfare,
 Deptt. of Agriculture, Cooperation & Farmers Welfare
 Directorate of Pulses Development
 6th Floor, Vindhya Bhawan
 Bhopal - 462004 (M.P.)

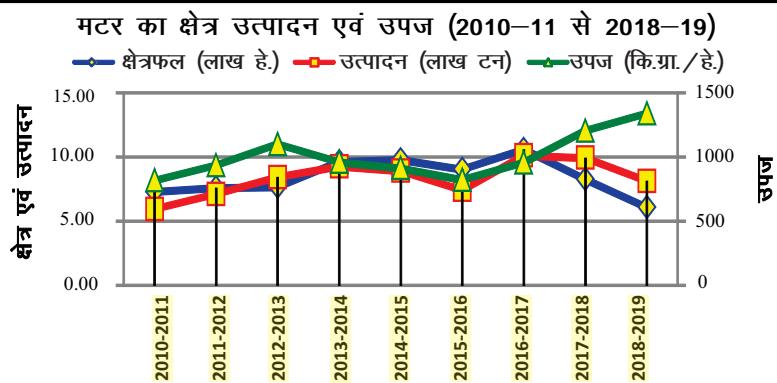
E-mail: dpd.mp@nic.in, Telefax: 0755-2571678, Phone: 0755-2550353/ 2572313



मटर

वैज्ञानिक नाम: पाइसम सटाइवम एल

क्षेत्रफल : 8.74 लाख हे.
 उत्पादन : 8.89 लाख टन
 उपज : 1018 कि.ग्रा./हे.
 (औसत 2014–15 से 2018–19)
 सर्वोच्च उत्पादन –
 10 लाख टन से अधिक (2016–17)



प्रमुख राज्य (औसत : 2014–15 से 2018–19)

(क्षेत्रफल : लाख हे., उत्पादन : लाख टन, उपज : कि.ग्रा./हे.)

मुख्य राज्य	क्षेत्रफल	% योगदान	उत्पादन	% योगदान	उपज
उत्तर प्रदेश	3.43	39	3.98	45	1161
मध्य प्रदेश	3.30	38	2.72	31	825
झारखण्ड	0.47	5	0.54	6	1141
राजस्थान	0.13	1	0.26	3	2061
असम	0.27	3	0.25	3	922
उपरोक्त योग	7.59	(87%)	7.75	(87%)	1020
सम्पूर्ण भारत	8.74		8.89		1018

प्रमुख जिले (2018–19)

प्रमुख राज्य	प्रमुख जिले
उत्तर प्रदेश (75%)	जालौन, झांसी, ललितपुर, महोबा, हमीरपुर, काशगंज, आजमगढ़, सुल्तानपुर, जौनपुर, अमेठी, मिर्जापुर, प्रतापगढ़
मध्य प्रदेश (71%)	जबलपुर, मंडला, दतिया, नरसिंहपुर, डिल्डोरी, सतना, सिवनी, विदिशा, रायसेन, सीधी, राजगढ़, छतरपुर, ग्वालियर
झारखण्ड (70%)	रांची, गुमला, पूर्वी. सिंधभूम, चतरा, सिमडेगा, गढ़वा, लोहर्दीगा, पलामू पश्चिमी सिंधभूम, सरायकेला, हजारीबाग
राजस्थान (90%)	जयपुर, नागौर, बूंदी, अजमेर, अलवर, सीकर, हनुमानगढ़
असम (51%)	लखीमपुर, सोनितपुर, जोरहाट, नलबाड़ी, दर्दाग, नागांव, बरपेटा

प्रमुख देश (औसत : 2014 से 2018)

(क्षेत्रफल : लाख हे., उत्पादन : लाख टन, उपज : कि.ग्रा./हे.)

देश	क्षेत्रफल	% योगदान	उत्पादन	% योगदान	उपज
रूस	11.08	15	22.01	16	1987
कनाडा	15.70	21	39.08	29	2489
चीन	10.31	14	20.46	15	1985
अमेरिका	8.20	11	12.48	9	1521
भारत	5.53	7	8.86	6	1603
उपरोक्त योग	50.82	(68%)	102.89	(75%)	2025
सम्पूर्ण विश्व	74.40		136.33		

आर्थिक महत्व :

- शुष्क फली (ड्राई बीन) और चना के बाद वैश्विक स्तर पर मटर तीसरी सबसे महत्वपूर्ण दलहनी फसल है तथा चना और मसूर के बाद भारत की तीसरी सबसे लोकप्रिय रबी दलहन है।
- यह विभिन्न प्रकार के शाकाहारी भोजन व्यंजनों के रूप में उपयोग की जाती है इसलिए इसे दुनिया भर में पसंद किया जाता है।
- इसके दाने का उपयोग साबुत या दाल के रूप में किया जाता है और मानव उपभोग के लिए विभिन्न प्रकारों (व्यंजनों) से उपयोग किया जाता है।
- सब्जियों के अलावा, यह मवेशियों के लिए एक चारा फसल के रूप में भी उगाया जाता है और कवर क्रॉप के रूप में मूदा क्षरण को रोकता है, लेकिन मुख्य रूप से मानव उपभोग के लिए दाने के रूप में उपयोग हेतु उगाया जाता है।

उन्नत प्रजातियाँ :

वर्ष	प्रजातियाँ	वर्ष	प्रजातियाँ
2010	अमन (आई.पी.एफ. 5–19), गोमती (टी.आर.सी.पी. 8)	2014	आई.पी.एफ.डी. 10–12, एच.एफ.पी. 715
2011	आई.पी.एफ. 4–9, वी.एल. मटर 47, दांतेवाड़ा मटर-1 (एस.के.एन.पी. 04–09)	2015	पंजाब 89
2012	एच.एफ.पी. 529	2018	पन्त मटर 243, आई.पी.एफ.डी. 12–2, आई.पी.एफ.डी. 2014–2

भारत सरकार

कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय
(कृषि, सहकारिता एवं किसान कल्याण विभाग)
दलहन विकास निदेशालय
छत्तीसगढ़ मंजिल, विन्ध्याचल भवन
भोपाल-462004 (म.प्र.)



Government of India

Ministry of Agriculture & Farmers Welfare,
Dept. of Agriculture, Cooperation & Farmers Welfare
Directorate of Pulses Development
6th Floor, Vindhya Bhawan
Bhopal - 462004 (M.P.)

E-mail: dpd.mp@nic.in, Telefax: 0755-2571678, Phone: 0755-2550353/ 2572313

बुवाई ऋतु: रबी

बुवाई समय: 15 अक्टूबर से 15 नवम्बर

बुवाई विधि: पंक्तियों के बीच सीड ड्रिल की मदद से 30–40 सेंटीमीटर की दूरी पर नाली बनाकर बुवाई करें।

अंतराल: लंबी प्रजाति— 30 X 45 से.मी., बोनी प्रजाति— 22 X 10 से.मी.

बीज गहराई: 4–5 से.मी.

बीज दर: लंबी प्रजाति— 70–80 कि.ग्रा./हे.; बोनी प्रजाति— 100 कि.ग्रा./हे.

पौध पोषक तत्व प्रबंधन: बायोगैस सलरी/कम्पोस्ट 2.5–5 टन/हे., 60 किलोग्राम फॉस्फोरस/हे. और 30 कि.ग्रा. पोटाश/हे. की दर से आधार रूप से मृदा परीक्षण के आधार पर फरोज बैंड में लगायें। अम्लीय मृदा में, राइजोबियम निवेशित बीज को महीन पीसे छूने के 1.5 कि.ग्रा. मात्रा से बीज को उपचारित किया जाना चाहिए।

सिंचाई: प्रथम — शाखाएं आने पर (बुवाई के 40–45 दिन बाद)

द्वितीय — फली बनने पर (बुवाई के 80–85 दिन बाद)

फसल प्रणाली:

फसल चक्र: मक्का — मटर; धान—मटर—गेहूं (उत्तरी भारत में लोकप्रिय होने के कारण); कपास — मटर; ज्वार—मटर; और बाजरा—मटर।

अंतर्वर्ती: इसे शरदकालीन गन्ने के साथ अंतर्वर्ती के रूप में बोया जा सकता है, जैसे मटर की दो पंक्तियों को 30 सेंटीमीटर की दूरी पर गन्ने की दो पंक्तियों के बीच में 90 सेंटीमीटर की दूरी पर बोया जाता है।

खरपतवार प्रबंधन:

- क्षेत्र की स्थितियों के आधार पर बुवाई के 30–45 दिन बाद निराई करना।
- अंकुरण पूर्व : पेंडीमेथेलिन 30 ई.सी. @ 1 कि.ग्रा. सक्रिय तत्व/हे. का उपयोग 50 दिनों तक खरपतवारों को नियंत्रित करने के लिए किया जा सकता है।

बीज प्रतिस्थापन दर :

फसल	2011	2012	2013	2014	2015	2016
मटर	21.76	28.48	36.12	34.09	29.97	30.23

कटाई: पत्तियां गिरने लगें, तने और फली भूरे या भूसे रंग में बदल जाएं और उनके अंदर 15% नमी के साथ बीज सख्त और खुरदरे होते हैं।

थेसिंग और भंडारण :

- 3-4 दिनों के लिए धूप में सुखाया जाता है ताकि 9–10% तक नमी को कम किया जा सके।
- ब्रुचिड्स और अन्य भंडारण कीटों से बचने के लिए मानसून की शुरुआत से पहले और मानसून के बाद ALP@1–2 गोलियां प्रति टन के साथ धूमन करें।
- उपज की कम मात्रा को अक्रिय सामग्री (मुलायम पथर, चूना, राख, आदि) या खाद्य/गैर खाद्य वनस्पति तेलों को मिलाकर या 1–2% W/W आधार पर नीम की पत्तियों के पाउडर को मिलाकर भी संरक्षित किया जा सकता है।

मिट्टी का प्रकार : 6.5 से 7.5 की पीएच मान के साथ अत्यधिक घुलनशील लवणों से मुक्त एक अच्छी जल निकास वाली दोमट मिट्टी, फसल की सफल खेती के लिए उपयुक्त होती है।

मौसम : वानस्पतिक विकास के समय मटर को ठंडे तापमान की आवश्यकता होती है। वृद्धि 13–18°C पर अच्छी होती है। फूलों की अवस्था के दौरान पाला पौधों को नुकसान पहुंचा सकता है। बादलों के मौसम के साथ उच्च आर्द्धता से डेंपिंग—ऑफ और पाउडरी मिल्ड्यू जैसे फफूंद रोगों का प्रसार होता है।

उर्वरक का प्रयोग मृदा परीक्षण रिपोर्ट पर आधारित होना चाहिए।

कीट व्यापि और रोग प्रबंधन :

प्रमुख रोग	प्रबंधन
स्ट	(i) कटाई के बाद, प्रभावित पौधों के अवशेष को जला दिया जाना चाहिए। (ii) मैनकोजेब 75 डब्ल्यू.पी. @ 2 कि.ग्रा./हे. को 1000 लीटर पानी घोल बनाकर छिड़काव करें। (iii) दो से तीन छिड़काव पर्याप्त हैं।
विल्ट	(i) 3 वर्ष का फसल चक्र अपनाएं; (ii) कार्बोक्सिन @ 2 ग्रा./कि.ग्रा. की दर से बीजोपचार करें; (iii) कार्बन्ड्याजिम (0.5%) के साथ संक्रमित क्षेत्र को ड्रेंचिंग करें; (iv) अधिक प्रभावित क्षेत्रों में अगेती बुवाई से बचें।
चूर्णित फफूंदी	(i) केराथियॉन (0.05%) या घुलनशील सल्फर @ 3 ग्राम/लीटर पानी के साथ घोल बनाकर छिड़काव करें और यदि आवश्यक हो तो 10–15 दिनों के बाद दोहराएं; (ii) प्रतिरोधी किस्मों को उगायें—पंत मटर—5, मालवीय—15, जे.पी.—885, एच.यू.पी.—2 आदि। (iii) देरी से बोनी से बचें; (iv) कटाई के बाद फसल अवशेष को जलाकर नष्ट करें।

प्रमुख कीट	प्रबंधन
मटर तना मक्खी	(i) अगेती बुवाई से बचें। (ii) बुवाई के समय नालियों में 7.5 किलोग्राम फोरेट 10 जी या 25 किलोग्राम कार्बोफ्यूरान 3 जी. प्रति हेक्टेयर की दर से उपयोग करें।
लीफ माइनर	(i) कीट का प्रकोप शुरू होने पर 250 मिली. फॉस्फामिड्स 85 एस.एल. (डाइमेक्रोन) या ऑक्सीडेमेटॉन 20 ई.सी. 1 ली./1000 ली. पानी में घोल बनाकर प्रति हे. की दर से छिड़काव करें। 15 दिनों के अंतराल पर दोहराएं (यदि आवश्यक हो)।
मटर माहू	(i) ऑक्सीडेमेटॉन 20 ई.सी. 1 ली./1000 ली. पानी में घोल बनाकर प्रति हे. की दर से छिड़काव करें। 10–12 दिनों के अंतराल पर दोहराएं।

फसल आर्थिकी :

मानक	रबी
उपज (औसत 2014–15 से 2018–19)	10.18 विंटल/हे.